B.A. PART-1

हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र

मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य शेषभाग-5

प्रश्न:- रीतिकाल का वीरकाव्य के प्रमुख कवि और उनका साहित्य बतायें?

उत्तर:- शेषभाग:-

(6) पद्माकर:-

यद्यपि पद्माकर को एक रीति-कवि के रूप में जाना जाता है तथापि पद्माकर ने अपने युग के वीर-साहित्य को भी योगदान किया है। 'हिम्मत बहादुर विरुदावली' इनका एकमात्र वीर-रसपूर्ण प्रशस्ति-गान है। पद्माकर राजस्थान के गोस्वामी अनूपगिरि उपनाम हिम्मत बहादुर के आश्रय में सन् 1782 से 1794 ई० के बीच रहे थे। इसी अवधि में इसका रचना-काल होना चाहिए। इसके आरम्भिक छन्दों में पद्माकर ने बताया है कि हिम्मत बहादुर ने गुजरात से बुन्देलखण्ड तक के राजाओं को अपने अधीन किया। अर्जुनसिंह नामक शासक बड़े-बड़े बादशाहों से भी भयभीत नहीं होता था। हिम्मत बहादुर ने अत्यन्त कुपित होकर इस पर आक्रमण किया और केन नदी के तट पर शिविर डालकर युद्ध के लिए तैयार हो गया। इसके पश्चात् अर्जुनसिंह के सहायकों का शौर्य-वर्णन, उनकी चतुरंगी सेना का विशद वर्णन उनके तोपखाने का आतंक वर्णित किया गया है, तदुपरान्त युद्ध का विस्तृत वर्णन किया गया है। अन्त में हिम्मत बहादुर द्वारा अर्जुनसिंह का सिर काटने का उल्लेख करके काली-कपाली के आशीर्वाद के साथ ग्रन्थ समाप्त हो जाता है।

इस ग्रन्थ के अतिरिक्त 'प्रतापसिंह विरुदावली' शीर्षक 68 पृष्ठों का एक ग्रन्थ पद्माकर के वंशजों के पास जयपुर में सुरक्षित है, जिसमें जयपुर के सवाई राजा प्रतापसिंह का यशोगान किया गया है। 'जगद्विनोद' नायिका भेद और रस-निरूपण का ग्रन्थ है, किन्तु इसके

आरम्भ में कवि ने अपने तत्कालीन आश्रयदाता जयपुर-नरेश महाराज जगतसिंह का प्रशंसा की है।

(7) चन्द्रशेखर वाजपेयी :-

इनका जन्म सन् 1798 ई० में असनी के निकट मुअज्जमाबाद (जिला फतेहपुर) में हुआ था। ये असनी के महापात्र करनेश कवि के शिष्य माने जाते हैं। ये अपने जीवन-काल में जोधपुर-नरेश महाराजा मानसिंह तथा पटियाला-नरेश महाराज कर्मसिंह के राज्याश्रय में रहे। पटियाला में ही सन् 1875 ई० में इनका देहान्त हो गया। इनके नौ ग्रन्थ बताये जाते हैं—
(1) हम्मीर-हठ (2) नखशिख (3) रसिक-विनोद (4) वृन्दावन-शतक (5) गुरु-पंचाशिका, (6) ज्योतिष का ताजक (7) माधवी-वसन्त (8) हरिभक्ति-विलास तथा (9) राजनीति।
हम्मीर-हठ इनकी वीर-रस की सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है। इसमें रणथंभौर के चौहान-वंशीय राजा हम्मीर देव और दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन के बीच होने वाले युद्ध का बड़ा सजीव वर्णन हुआ है। इसकी कथावस्तु इस प्रकार है—

अलाउद्दीन सुल्तान की एक बेगम से मीर मुहम्मद मंगोल नामक एक सरदार अनुचित सम्बन्ध रखता है। यह बात जब अलाउद्दीन तक पहुँच जाती है, तब वह घबराकर प्राण-रक्षा के लिए महाराजा हम्मीर की शरण में आ जाता है। शरणागत की रक्षा के लिए हम्मीर अलाउद्दीन से दुश्मनी मोल ले लेते हैं, लेकिन मंगोल को उनके हवाले नहीं करते। परिणामस्वरूप

अलाउद्दीन रणथम्भौर पर आक्रमण करता है। उभयपक्षों में घमासान युद्ध होता है और अन्त में अलाउद्दीन हार जाता है। यद्यपि इसमें अलाउद्दीन की कायरता का अतिशयोक्तिपूर्ण चित्रण किया गया है, किन्तु भाषा, प्रवाह, शब्द-शक्ति का चमत्कार और रस-निरूपण की दृष्टि से यह एक सफल वीर-रस प्रधान काव्य है।

(8) जोधराज :-

ये बिजावर ग्रामवासी गौड़वंशोत्पन्न अग्निहोत्री ब्राह्मण थे। ये नीमराणा (वर्तमान नीमराना-अलवर) के राजा चन्द्रभान चौहान के राज्याश्रित कवि थे। उनके ही अनुरोध पर इन्होंने 'हम्मीर रासो' नामक वृहद् प्रबन्ध-काव्य की रचना की थी। इस ग्रन्थ का रचना-काल सन् 1828 ई० माना जाता है। 'हम्मीर-हठ' के समान इसमें भी रणथंभौर के राजा हम्मीर देव और अलाउद्दीन के युद्ध का वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ को आख्यान-काव्य का रूप देने के लिए कवि ने अनेक काल्पनिक घटनाओं का अत्यधिक विस्तृत और अस्वाभाविक वर्णन किया है। इसमें अलाउद्दीन की बेगम रूपविचित्रा और महिमाशाह की हम्मीर देव के यहाँ शरण, हम्मीर और अलाउद्दीन का युद्ध, अलाउद्दीन की हार, उसको बन्दी बनाकर हम्मीर के सामने प्रस्तुत करना, हम्मीर की उदारता से उसका मुक्त हो जाना, सेना की भूल के कारण दुर्ग की समस्त नारियों का जौहर-व्रत करना और दुखी होकर हम्मीर का अपना सिर काटकर महादेव को समर्पित करना, उसके मरने का सन्देश सुनकर अलाउद्दीन का डूब मरना आदि

घटनाओं का वर्णन किया गया है, अतः कहा जा सकता है कि काल्पनिक घटनाओं की यह सरस रचना है।

इन कवियों और रचनाओं के अतिरिक्त अनेक वीर-रचनाएँ इस काल में लिखी गयी हैं, जिनमें लालचन्द जैन कृत 'गोरा बादल', कवि रणजय राम-कृत 'जयसिंह चरित्र', डूंगरसी-कृत 'छत्रपाल रासो', श्रीपति भट्ट कृत 'हिम्मत प्रकाश', सबलसिंह चौहान-कृत 'महाभारत चक्रव्यूह', निवाज तिवारी-कृत 'छत्रसाल विरुदावली', महापात्र जैतसिंह कृत 'मुअज्जमशाह के कवित्त', बादर-कृत 'वीर-भाण', हरिनाम-कृत 'केशरीसिंह समर', दयालदास कृत 'राणा रासो', महाराजा जयसिंह कृत 'जयदेव विलास', सेनापति कृत 'गुरु शोभा', आलिराय-कृत 'जंगनामा', केवलराम कृत 'वाणी विलास', करणीदास-कृत 'सूरज-प्रकाश', वीरभाण-कृत 'राजरूपक', महाराजा रणजीतसिंह कृत 'बाहु-विलास', शाहू जी पंडित कृत 'बुन्देल-वंशावली' आदि रचनाएँ गिनायी जाती हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न :- रीतिकाल का वीरकाव्य के प्रमुख कवि और उनका साहित्य बतायें ?

प्रेo :-
डॉo समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी S.R.A.P.C (B.R.A.B.U.M)
मोo नo - 7909046087
दिनांक - 21 - 02 - 2022